विज्ञान प्रकाश वर्ष : 23, अंक 4, अक्टूबर–दिसम्बर 2025 ISSN : 1549-523-X

पृथ्वी

भारतीय दर्शन में पृथ्वी पञ्चमहाभूतों में से एक प्रधान तत्त्व है, जिसको स्थिरता, घनता और ठोसत्व के लिए जाना जाता है। पृथ्वी तत्त्व वह भी है, जिसमें गन्ध समवाय सम्बन्ध से रहती है, जिससे उसके स्वभाव का निर्धारण होता है। इस लोक में जितने भी पदार्थों में गन्ध का अनुभव किया जाता है, चाहे वह पुष्प की गन्ध हो या फिर वर्षा होने पर मिट्टी की गन्ध हो या फिर किसी भी वस्तुमात्र में गन्ध का अनुभव हो, वह सब पृथ्वी के कारण ही होता है।

पृथ्वी के दो रूप हैं – 1. नित्यरूप पृथ्वी और 2. अनित्यरूप पृथ्वी। नित्य परमाणुरूप (सूक्ष्मतम) है। अनित्य कार्य (घटादि स्थूल) रूप है। यही स्थूलरूप पृथ्वी तीन प्रकार के रूपों में इस लोक में देखी जाती है– शरीर, इन्द्रिय और विषय। पृथ्वी का शरीररूप लोक के समस्त प्राणियों और पदार्थों को आकार प्रदान करता है, इसीलिए प्राणियों के शरीर को पार्थिव भी कहा जाता है। इन्द्रिय गन्ध को ग्रहण करने वाली घ्राणेन्द्रिय है, जिससे पृथ्वी तत्त्व का अनुभव किया जाता है और जिससे पृथ्वी के होने की पुष्टि भी होती है । यह नासिका के अग्रभाग में स्थित है। विषय मिट्टी, पत्थर आदि समस्त प्रकार के स्थावर रूप हैं, जो पर्वत, पठार, मैदान आदि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में पृथ्वी के लिए कहा गया है कि

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।

(अथर्ववेद, 12/1/1)

सत्य, बृहदृत, दीक्षा, परम रहस्य के ज्ञान में सहायक कर्म, तप और यज्ञ पृथ्वी को धारण करते हैं। हमारे भूत और भविष्य का पालन करने वाली वह पृथिवी (पृथ्वी) हमारे लिए इस लोक में विस्तृत स्थान प्रदान करे।

तीनों कालों में रहने वाले सत्य, महान् ऋत, ब्रह्म (परमेश्वर) नियम, उग्र तप और अग्निष्टोमादि श्रौतस्मार्त यज्ञ – ये सभी पृथिवी को धारण करते हैं। सर्वबाधारहित मनुष्यों के समक्ष पृथ्वी के उन्नत, निम्न और सम प्रदेश हैं। यह पृथ्वी नाना प्रकार की शक्तियों और औषधियों को धारण करती है।

इस पृथ्वी में समुद्र, नदियाँ, जल, अन्न और मनुष्य उत्पन्न हुए हैं और इसी में यह स्थावर–जंगम जगत् प्राण धारण करता है और समस्त प्रकार का व्यवहार करता है। इसी पृथ्वी से पूर्व आदि चारों दिशाएँ, व्रीहि–यव आदि अन्न उत्पन्न हुए हैं। पृथ्वी नाना प्रकार से चेष्टमान प्राणियों का धारण तथा पोषण करती है। यही पृथ्वी गौओं, घोड़ों और पक्षिगण की प्रतिष्ठा एवं आधाररूपा है। यह पृथ्वी सम्पूर्ण विश्व को धारण करने वाली, हिरण्य आदि धन को धारण करने वाली, सबको आश्रय देने वाली, सुवर्ण आदि की खानों को अपने वक्षःस्थल में रखने वाली, स्थावर–जंगम जगत् को यथोचित स्थान में रखने वाली तथा वैश्वानर अग्नि को धारण करने वाली है। यह पृथ्वी सम्पूर्ण संसार को आश्रय देने वाली अत्यन्त विस्तीर्ण है।